सतगुरू सत्तनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

साहिब सतपुरूष जी द्वारा एक अदभुद्ध आलोकिक दृष्टांत

सहज सत्त भक्ति मार्ग की धरोहर 'सत्त सुरति आनंद' और निस्वार्थ, निष्चल, विरह, वैराग़ और तड़प से ओतप्रोत भाव जो हम सब हंसात्माओं के पिता ''साहिब सतपुरूष जी'' की 'वे नाम सुरति धारा' के माध्यम से निरंतर आदि काल से हमारे निजघर सत्तलोक से प्रवाहित होते चले आ रहे हैं, जो इस बात का संकेत होते हैं कि हम उसी सतलोक आभा से उत्पन्न उसी का ही अंश हैं। ''सतपुरूष साहिब जी'' तो हम्हें सतलोक अपने असली घर वापिस ले जाने के लिये ही तो समय समय पर पूर्ण संत सतगुरू परमहंसों का आगमन इस संसार में कराते रहे हैं जिनके द्वारा वो हम्हें इस मन माया के भवसाग़र से पार कराते हैं।

हम अति भाग्यशाली हैं कि इस वक्त वर्तमान काल में हम एक नहीं अपितु दौ दौ पूर्ण संतों 'साहिब सतगुरू जी व बड़े साहिब जी' की शरण में हैं। एक अदभुद्ध आलोकिक विस्मयकारी रोमांचित कर देने वाला और ''साहिब सतपुरूष जी'' की अपने साधकों (हंसात्माओं) के प्रति प्रीत दर्शाने वाला दृष्टांत उस वक्त सामने आया जब एक फरवरी, 2022 को एक तरफ 'साहिब सतगुरू वे नाम परमहंस जी' तालाब तिल्लो आश्रम में 'बड़े साहिब जी' को सतपुरूष साहिब जी के आदेश अनुसार गद्दी पर विराजमान होकर आगे जगत जीवों के कल्याण हेतु कार्य करने की प्रक्रिया निभा रहे थे तो ठीक उसी वक्त दूसरी तरफ हमारे अति प्यारे आगु साधक नरेंद्र व रजनी जी की समर्पणता और प्रेम निष्ठा से प्रसन्न होकर सरवाल कालोनी स्थित उनके घर साहिब सतगुरू जी की समाधि अवस्था वाली तस्वीर के अंदर सतगुरू जी के हाथों से एक श्वेत आभा युक्त ज्योति साहिब सतपुरूष जी ने प्रज्जवलित कर के समूचे जगत को अपनी उपस्थिती का प्रमाण दिया। यह आभायुक्त ज्योत पूरे तीन दिन तक साधक नरेंद्र जी के घर में प्रज्जवलित होती रही जिसे देख कर सभी आचंभित भी हुऐ। फिर जैसे ही उन्होंने इस का ज़िक्र साहिब सतगुरू जी से किया तो साहिब जी ने इसे केवल साहिब सतपुरूष जी द्वारा अपने साधकों की श्रद्धा और समर्पणतः का प्रतीक ही बताया और कहा कि कैसे हम सबके परमपिता अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं।

'साहिब सतगुरू जी' की वाणी अनुसार ये सब ''साहिब सतपुरूष जी'' की प्रसन्नता का प्रतीक ही है जो उन्होंने 'बड़े साहिब जी' को सतगुरू जी द्वारा ऊर्जा दात

देकर आगे पूरे जगत के कल्याण हेतु सारे जगत के लिये एक संकेत दिया कि 'बड़े साहिब जी' अपार शक्तियों से ओत प्रोत हो कर इस संसार के कल्याण करने हेतु तैयार हैं।

'सतगुरू साहिब जी' की वाणी अनुसार इस अदभुद्ध आलोकिक दृष्टांत से रिहाड़ी आश्रम कुटिया की भांति साधक नरेंद्र जी का घर भी अमर हो गया है जहां साक्षात सत्तपुरूष जी ने स्वयं आकर ज्योति प्रज्जवलित की हो। और ये सब इसलिये भी संभव हो पाया है कि साधक नरेंद्र जी के घर में नित्य प्रतिदिन पूर्ण श्रद्धा भाव से सिमरन और आरती हुआ करती है और ये सब कुछ पूरे प्रेम भाव से बिना किसी संसारिक मांग के निस्वार्थ भाव से होता है, और जहां पूर्ण समर्पणतः हो वहां 'साहिब सतपुरूष जी' तो प्रकट होंगे ही ना। क्योंकि 'वे नाम' सुरति धारा कोई पंथ, धर्म अथ्वा आध्यात्मिक संस्थान नहीं अपितु समूचि मानव जाति और अन्य जिज्ञासुओं के लिये एक सुरति प्रवाह ही है जो सत्त को जानने और सहज भक्ति मार्ग प्रशस्थ करने के लिये निरंतर बहे जा रहा है और ये प्रवाह कभी भी समाप्त नहीं होगा। सत्त की सत्ता कभी लुप्त हो ही नहीं सकती।

हालांकि निरंकार भगवन की ये त्रिलोकि माया आलोकिक, अविष्कारिक तथा चमत्कृतिक विस्मय कर देने वाली घटनाओं से भरी पड़ी है। ठीक इसी प्रकार निरंकार दायरे की सर्गुण व निर्गुण भक्तियां करने वाले संत, ऋषि मुणि व गुरूआजन भी ऋद्धि सिद्धियों द्वारा चमत्कार दिखाने की होड़ में लगे रहते हैं क्योंकि इस त्रिलोकि की परम मोहिणी माया का एकमा्त्र लक्ष्य चकाचौंध मन भावन विस्मय कर देने वाली घटनाओं से आत्म सुरति को भ्रमित करना है। इन सब से परे सहज सतमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू स्वयं भी पूर्ण जाग्रत अवस्था में पूर्ण सुरतिवान होते हैं अर्थात वे काया में रहते हुए भी पूर्ण मोक्ष की अवस्था में होते हैं तथा वे अपनी शरण में आने वाले शरणागत को भी विदेह सब्द (सार नाम दात) देकर पूर्ण सुरतिवान बनाकर मोक्ष पथ पर अपने संग निजघर ले चलते हैं।

एक ओर निरंकार दायरे में जहां अनगिनत चमत्कारी घटनाऐं आये दिन जगत गुरूआजन और ऋद्धि सिद्धियों से युक्त भक्तजन दर्शाते रहते हैं जैसे बड़े–बड़े प्रसिद्ध गुरूआजनों द्वारा हाथों से बबूती निकालना, मीठा जल अथ्वा कोई पदार्थ प्रकट कर देना व भूत–प्रेतों से निजात दिलाना ईत्यादि। वहीं दूसरी ओर ठीक इसके विपरीत सहज सत्य मार्ग के ''पूर्ण संत साहिब सतगुरू'' एक दम शांत, एकांतवास में रहते हुऐ आत्मां के

मूल परमपिता परमात्मां ''साहिब सतपुरूष जी'' की भक्ति में लीन रहते हैं। साथ ही साथ वह मन माया, चमत्कारों, ऋद्धि सिद्धियों और करामातों से दूरी बनाये रखते हैं क्योंकि वह पूर्ण सुरतिवान अवस्था में होते हैं।

साहिब सतगुरू जी की वाणी अनुसार प्रीत से ओत प्रोत यह अदभुद्ध आलोकिक प्रेरणादायक घटना स्वयं साहिब सतपुरूष जी की आभा द्वारा ही घटित हुई। इसमें मैनें व बड़े साहिब जी ने कुछ नहीं किया।

साधक रजनी जी के अनुसार ये दृष्य अति अविस्मरणिय था जो इस प्रकार है :—

दिनांक एक फरवरी, 2022 मंगलवार का दिन था, मैं साहिब सतगुरू जी के फोन की प्रतीक्षा कर रही थी क्योंकि पिछले दो दिन से मेरी आत्म सुरति साहिब जी के चरणों में लीन उन्हीं के ज्योति रूप के दर्शन कर रही थी। हम सुबह साहिब जी के सिमरन उपरांत आरती कर रहे थे तभी ध्यान देते हैं कि साहिब जी की समाधि अवस्था की तस्वीर के भीतर उनके हाथों से एक श्वेत ज्योर्तिमय उर्जा उपर की ओर उठ रही थी। आश्चर्यचकित होकर हम ज्योति को देखते रहे फिर आरती समाप्त कर दी। पुनः रात की आरती के वक्त अभी भी वह श्वेत उर्जा साहिब जी के हाथों से उपर की ओर निरंतर उठ रही थी जो कि पूरा दिन निरंतर उसी प्रकार प्रज्जवलित हो रही थी। तीन फरवरी सुबह तक वैसी ही निरंतर ज्योति प्रज्जवलित होती रही। मैं, अंदर से एक विचलित परन्तु श्रदेय भाव से भरी हुई थी कि साहिब जी आप से दौ दिन से फोन पर भी बात नहीं हुई थी तथा इस घटना के बारे में किसी से भी कोई बात नहीं कर पाई। तीन फरवरी लगभग दिन के ग्यारहां बजे साधक अजय जी का फोन आया तो मैने उनसे इस वृतान्त के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। साधक अजय जी ने कहा कि आप उस ज्योति की तस्वीर लेकर मुझे भेजो। मैने अपने फोन से तस्वीर उन्हें भेज दी। तस्वीर देखने पर वो भी अभिभूत हुऐ साथ ही उन्होंने कहा कि आप साहिब जी के फोन की प्रतीक्षा ना करें और शीघ्र ही उन्हें स्वयं फोन कर के इस घटना के बारे में उन्हें विस्तारपूर्वक अवगत कराऐं। अजय जी का फोन काटते ही जैसे ही मै फोन करने के लिये उठी, इसी अंतराल में सहसा साहिब जी का ही फोन मुझे आ गया तो मैने सारा वृतान्त उनसे विस्तार पूर्वक सुनाया। ''साहिब सतगुरू जी ने बताया कि मुझे ''साहिब सतपुरूष जी'' इस चौले को त्याग कर दूसरे चौले में जाने का आदेश दे रहे थे और साथ ही साथ मैनें 'बड़े साहिब जी' को गद्दी भी सौंप दी है, अब से 'बड़े साहिब जी' ही इस गद्दी के मालिक हैं। मैं अब उनकी

सेवा सबूरी में रहकर सभी कार्य करूंगा। जब ये घटना घट रही थी, इसी के प्रतिबिंब स्वरूप 'साहिब सतपुरूष जी' ज्योति रूप धारण करके मेरी इस समाधि अवस्था तस्वीर में दर्श दे रहे थे''। फिर मैने साहिब जी से कहा कि पिछले दौ दिन से प्रज्जवलित आलोकिक ज्योति अभी भी निरंतर प्रकाशमान है। साहिब जी से आज्ञा लेकर मैने इस ज्योति की तस्वीर उन्हें फोन पर भेजी जिसे देखते ही साहिब जी गद्‌गद हो उठे। साहिब सतगुरू जी के मुखारबिंद से पुनः ये शब्द उच्चारण हुऐ कि ये ज्योति के माध्यम से ''साहिब सतपुरूष जी' अपना संदेश दृष्टांत रूप में दे रहे हैं कि सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरू जी ने दूसरे संत सतगुरू जी को गद्‌दी सौंप दी है, इस पूरी प्रक्रिया का यही संदेश था''।

'सतपुरूष साहिब जी' की अपार कृपा से ये अदभुद्ध आलोकिक घटना दृष्टि्‌गौचर हुई। उधर 'साहिब सतगुरू जी' 'बड़े साहिब जी' को अपनी ऊर्जा प्रदान कर रहे थे और 'बड़े साहिब जी' बड़ी श्रद्धा पूर्वक उस ऊर्जा को ग्रहण कर रहे थे। इधर 'साहिब सतगुरू जी व साहिब सतपुरूष जी' की ऊर्जा साहिब जी की समाधि अवस्था की तस्वीर में हम्हें दर्श दे रही थी। इसके उपरांत उधर आश्रम में मोबाईल फोन पर ही 'साहिब सतगुरू जी' ने उस ज्योति रूप के दर्श सबसे पहले 'बड़े साहिब जी' और श्राविका जी को कराये। फिर साहिब 'सतगुरू जी' ने अपने मुखारबिंद से आदेश दिया कि इस ज्योति पुण्झ की तस्वीर सभी साधकों को भी भेजो ताकि सब साधक भी इस ज्योति के दर्श कर सकें। साथ ही कहा कि इस धरा के सभी जीवात्मां 'साहिब सतपुरूष जी' की सत सुरति आभा ज्योति रूप के दर्शन पायें। 'साहिब सतगुरू जी' ने ये भी कहा कि अब ये ज्योति धीरे धीरे स्वयं ही लुप्त हो जायेगी और ठीक वैसा ही हुआ, कुछ ही घंटों में यह प्रज्जवलित ज्योत धीरे धीरे समाधि अवस्था की तस्वीर से लुप्त हो गई। 'साहिब सतगुरू जी' का ये साक्षात संदेश था कि 'बड़े साहिब जी ने' 'साहिब सतपुरूष जी' की धरोहर 'साहिब सतगुरू जी' से ग्रहण कर ली है।

'साहिब सतगुरू जी' पल पल अपने सत सुरति अनुभव की वर्षा करते रहते हैं, 'साहिब सतगुरू जी' हम अति भाग्यवान हैं जो आप ने हम्हें दर्श दिये, अपनी कृपा हम सभी साधकों पे बनाये रखना।

15 फरवरी, 2022 को मंगलवार 'साहिब सतगुरू जी' का पुनः फोन आया कि मैं 'साहिब सतपुरूष जी' के आदेशानुसार उस स्थान को नमन करने और शीष निवाने के लिये आ रहा हूं, जहां मेरे 'सतपुरूष जी' ज्योतिपुण्झ रूप में प्रकट हुऐ थे। शाम को साढे चार बजे वह शुभ घड़ी भी आ गई जिसका मैं बड़ी बेसब्री से श्रद्धापूर्वक पलकें बिछाये प्रतीक्षा कर रही थी। मेरे 'साहिब सतगुरू जी' ने फिर मुझे आचंभित करते हुऐ अपने संग संग 'बड़े साहिब जी' को भी लाया। आज की शुभ बेला में मैनें 'बड़े साहिब जी' संग–संग 'सतगुरू जी' के दर्श करने के उपरांत दोनों के चरणों में प्रणाम करके कहा कि इस जन्म में मैनें जीते जी ही निजधाम पा लिया है। 'साहिब सतगुरू जी' आप ने मेरे अंतःकरण में सुरति से बता दिया कि जीते जी मोक्ष पाना क्या होता है। आज मुझे आप ने मेरे निवास स्थान पर आकर जो दौलत प्रदान की उसका उपकार मेरे आने वाली पीढ़ियां भी धन्यवाद और नमन करें तो भी वे नहीं चुका सकती। साहिब जी आप दोनों जहां पर विराजमान होंगे वह स्थान निजधाम ही तो हो जाता है, ये भाव भी प्रकट हुऐ।

''धरती पर साक्षात सतगुरू जी आप का आना,
इस धरती के जीवों का मुक्ति मोक्ष पाना''

साहिब जी

सतगुरू सत्तनाम   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी